INDIAN SCHOOL NIZWA - WORKSHEET

HINDI

अपठित गद्यांश

Name: _____ Date:_____ Class: X Sec: ___

	निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प से चुनिए -
	पाँचों उंगलियाँ समान नहीं होतीं; ऐसे ही सब बच्चे एक ही विचार के नहीं होते। उनमें भिन्न-भिन्न विशेषताएँ हुआ करती हैं। यद्यपि प्राकृतिक प्रवृत्तियाँ सभी में समान हैं, किन्तु किसी-न-किसी में कोई प्रवृत्ति बढ़ी हुई होती है। उदाहरणार्थ- कोई बालक आगे चलकर डॉक्टर बनता है, कोई इंजीनियर, कोई अध्यापक, कोई कवि, कोई कलाकार, कोई नेता, कोई समाज सुधारक इत्यादि। समाज को इन सब प्रकार के मनुष्यों की आवश्यकता है और इन्हीं व्यक्तियों से समाज का निर्माण होता है। अतः शिक्षा-प्राप्ति के समय प्रत्येक बालक के व्यक्तित्व से परिचित हो जाना उसके जीवनोत्थान के लिए सीढ़ी का काम करता है। इन सब बातों का विचार कर बालक को शिक्षा देने से ही उसके व्यक्तित्व का विकास हो सकेगा और वह भावी जीवन-संग्राम का कुशल योद्धा बन पायेगा। प्रत्येक अध्यापक को भी बालकों की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर चलना चाहिए। प्रारम्भ से ही उनमें आशा के बीज बोने चाहिए और अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ होने पर भी उन्हें हँसते हुए सहने की शिक्षा देनी चाहिए। इससे वे अपने भविष्य को सुखमय बना सकते हैं। शिक्षा केवल पाठशाला में ही सीखने की कला नहीं है। यह जीवन के साथ वैसे ही सम्बद्ध है, जैसे-शरीर के साथ प्राण। शिक्षा जीवनोपयोगी वस्तु है। यह व्यक्ति तक ही सीमित नहीं है वरन् समाज में भी उसी रूप में निहित है। लिखना, पढ़ना और हिसाब लगा लेना ही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य नहीं है। वस्तुतः शिक्षा का अर्थ है- शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक विकास। वास्तविक शिक्षा प्राप्त करने के लिए पाठशाला बनानी होगी और माता-पिता को बच्चे के सुधार के लिए कुछ करना होगा। सर्वप्रथम, जीवन के प्रारम्भिक दिनों में शिशु के शारीरिक विकास पर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए, क्योंकि उत्तम और स्वस्थ शरीर में ही पुष्ट मस्तिष्क की संभावना की जा सकेगी और शरीर और मस्तिष्क के स्वस्थ होने से शुद्ध विचारों का सृजन हो सकेगा। इन सुधारों के पश्चात्

	बच्चों की आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें भावी जीवन-पथ का सफल पथिक बनाने के लिए उत्तम शिक्षा देनी चाहिए।
1	**बालक आगे चलकर अलग-अलग व्यवसाय अपनाते हैं, क्योंकि-** (i) पाँचों अंगुलियाँ एक समान प्रत्येक कार्य में सहायक नहीं होती (ii) सबकी प्राकृतिक प्रवृत्तियाँ समान नहीं होती (iii) प्रत्येक बच्चे में भिन्न-भिन्न विशेषताएँ हुआ करती हैं (iv) मनुष्य का स्वभाव भिन्न होता है।
2	**शिक्षा का उद्देश्य है-** (i) लिखना, पढ़ना और उत्तम व्यवसाय पाना (ii) बच्चों में सुधार लाना (iii) बच्चों को समाज का अनुशासित नागरिक बनाना (iv) बच्चों का शारीरिक, मानसिक व नैतिक विकास करना
3	**शिक्षा-प्राप्ति का जीवन के साथ वैसा ही सम्बन्ध है जैसा-** (i) तन का मन से (ii) शरीर के साथ प्राण का (iii) मनुष्य और समाज का (iv) दो मित्रों के बीच व्यवहार का

4	**किस प्रकार की शिक्षा से आप अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं-** (i) इंजीनियरी और डाक्टरी की (ii) आशावादी बनकर कष्ट सहन करने की (iii) सदा बड़ों का सम्मान करने की (iv) सदा अनुशासित नागरिक बनने की
5	**जीवन की शुरूआत से ही बच्चों में बीज बोने चाहिए-** (i) शिक्षा के (ii) अध्यापन के (iii) एकता के (iv) आशा के

समाप्त